



गो १ लक्ष्मणाय नमः

सिद्धिपत्र

१२० नमो गायत्री लक्ष्मणाय नमः स्तुत्यं नयेव नशरु मंद वीस वस्वती
येव एता जयमदिवरु ॥

उत्तमानायायनाय ॥ १ ॥ अथ न क उ वाच ॥ अथ श्री प्रभु रं वाच ॥ मया कं गृह्य रु कि न ३
 धर्मा काममाकार्थः कुरु ग्राविन्द कीर्तनं ॥ ॥ ॥ अथ न क उ विन धान ॥ अथ श्रीः
 प्रभु प्रिया वचनः ॥ अथ श्री यागुनिः ॥ नारायण म क रु कि न स्या रु दा धर्म अर्थ ६
 कामभाक्ष लाय यानं ॥ ग्राविन्द या कीर्तन या उ ध कः य प्रि कि न या जा र्क दा
 ॥ ॥ यदि रु सि य रं कू नं कू नाना गत्य न म पदं । गदा द न ध न उ न्दु कू न ग्रा ६

विन्द कीर्तनं ॥ ॥ अथ न क उ ध द कू नान लाय यलसा कू नान यन म य द लाय
 ला यलसा ध द न म आनन्द ध या द ग्राविन्द या कीर्तन ॥ २ ॥ कर्म नीम न सा वा
 चा यदि रु सि य रं कू नं । गदा द न ध न कू याल कू न ग्राविन्द कीर्तनं ॥ ॥ कर्म नी
 मनन वचननं ॥ अथ काय म यलसा ध द न म आनन्द न रं या जा कू न याल मनः ॥ ग्रा ६
 विन्द या कीर्तन या ॥ २ ॥ सर्व ना ग विनाश य आत्मनः पुरु मि कू ना अरु त्ति र्ग न दा ना उ

न कृत्वा विन्दकी र्हेन ॥ ॥ समस्त वा गङ्गा न कृत्वा न धर्मिन कृत्वा न यद्व
यानं विन्दकी र्हेन यावत्ता जा धर्क कदा ॥ ७ ॥ स सावमल नाय श्व य
दि कृमि क यनृपा न दावि लुमि न कृत्वा कृत्वा विन्दकी र्हेन ॥ ॥ स साव
या मयन इव स नाय प दू न के ला ०० कृत्वा न सा रुना जा धर्क सव कृत्वा विन्द
विन्दया की र्हेन याव ॥ ७ ॥ यदि कृमि क यनृपा न दावि लुमि न कृत्वा
नानि र्हेन मरीया ल कृत्वा विन्दकी र्हेन ॥ ॥ ग्व कृत्वा रुयः मामालः यमला

कया रुयने लाम ग्वान सा धर्क सदा कृत्वा विन्दया की र्हेन याव ॥ ७ ॥ जा
दि न सारु ल नि र्हेन यदि वा कृमि क यनृपा न दावि लुमि न कृत्वा विन्दकी
र्हेन ॥ ॥ सुनानं धर्क नहि न ०० कृत्वा न सा रुना जा धर्क सव कृत्वा विन्द
कृत्वा कि न कि र्थ २ विन्दया की र्हेन याव ॥ ७ ॥ यत्नादि या न कादी ना यदि कृ
मि पत्रि क यनृपा न दावि लुमि न कृत्वा विन्दकी र्हेन ॥ ॥ वृत्त रुखादिः स
मस्त वा गङ्गा न कृत्वा न धर्मिन कृत्वा न यद्व

ज्याकी लेनयाव ॥ ८ ॥ यकुमिच्छुमिना ऊन ॥ जन्ममृत्यु जन्मादिकं कुर्यं यदि
सदा रुक्म ॥ ९ ॥ कुरु ग्मादिन्दकी लेन ॥ ॥ वृत्तसि यथाथशयः स य
भानगलाः यनसासदा रुकि न ग्मादिन्दयाकि लेनयावना जा ॥ १० ॥ पापवृद्ध
विना ग्मायः धर्मो लेनविवृद्धय ॥ दिवानिर्गन्दा जा ऊनः कुरु ग्मादिन्दकी लेन
॥ ॥ पापसिमाथयावः पुन्यपव नवा धनय लाः यनसाः द्वि थं द्वि थं ग्मादिन्दया
की लेनयावना जा ॥ १० ॥ मनस ४ पी मि जननः मदि नानी विनागर्न ॥ शु रु दं

विष्णु रुक्मालाः कुरु ग्मादिन्दकी लेन ॥ ॥ मनसय यापुः जदि न रु न क
विष्णु रुकि या न ॥ गुरु विवः थथ ॥ ग्मादिन्दयाकी लेनयाव ॥ ११ ॥ ना
उ को ग्माथ विपलान् पुनमिच्छुमि स माद ॥ नदा यन नम रु माः कुरु
॥ ग्मादिन्दकी लेन ॥ ॥ विपलनाशु को गः विपलसंयमिः रु नो ला यलाय
नसाः थवयमः नवजलया रु न ॥ ग्मादिन्दयाकी लेनयाव ॥ १२ ॥ दुष्टगुह
पगमनः सर्वादि रु र्गनृयः गुरुद सर्व कालयः कुरु ग्मादिन्दकी लेन ॥ ॥

इष्ट शरुक् रु धालसाः शनि शत्रुः वाहः आदि न धन विद्याः वीजा रु वृत्तना
समस्त पीठां रु न के समस्त वाहः शुरु याक थिथि द आदि न या की रु न के
धान से न याव ॥ १३ ॥ पूर्व उ न्न कृ नाना व पायाना मि रु मं रु यं । न का रु प ल या
का र्थः कृत् आदि न की रु न ॥ ॥ पूर्व उ न्न सः उ रु न या काः पाय रु न क
ना रु व सा धन स रु न आदि न की रु न का र्थ याव ॥ १४ ॥ त्र ण यदि निपू न उ रु
व मि रु सि न ना धि य । न दा स वा ल ना नि रु यः कृत् आदि न की रु न ॥ ॥ दे गा न स

पात्र रु द की रु नः भा य रु न् रु द्वा द न साः रु ना रु नः धन स भ म रु उ ल रु न ॥
वि न्द यो की रु न याव ॥ १५ ॥ वा जि य रु स रु सा धीः नि रु यं रु ल म रु सी य
सि पा न रु ल्का य रु पा लः कृत् आदि न की रु न ॥ ॥ अ श्व भ ध द ल रु
ः दि रु थं दि रु थं या रु रु ल ला ये लाः इ ल साः रु थ रु ना यी द रु द रु नः आ वि न्द य
की रु न याव ना रु ॥ १६ ॥ नि रु या रु स रु व म रु दी पा लः यदि वा रु मि रु य रु द रु स मा दि न म
ना रु रु वाः कृत् आदि न की रु न ॥ ॥ दि रु थं थ व रु न रु न रु ला य रु ल साः

किं धर्मन आदि नहु यावः दना जाहु न गमविन्द याकी रुनयाव ॥ १० ॥
यदि सैसा न कहु ॥ ११ ॥ दनु मिहु सि सै नृप न दा रु कि ससा ह्याय कव गमवि
न्द की रुन ॥ ॥ ॥ रु नी सै साव याद ॥ १२ ॥ रु न के ॥ ॥ ॥ काये नसा गविः ससा
त्र याद ॥ १३ ॥ रु धा लसा गग रु यापः वयः जुन गग गः जुन गयी जः मय
नहु यः थवि द ॥ १४ ॥ रु स यः दना जो धु व न स रु कि ॥ ॥ ॥ स ज्ञा ह्या याद
व गमवि द या की रु नयाव ॥ १५ ॥ ॥ वि पू व सा च धर्म ह्या पा र गनु ॥

यदि रु सि नत्र नम न ना रु लाः कव गमविन्द की रुन ॥ ॥ ॥ वि पू
व धर्म द को यी पा व न न ॥ ॥ ॥ रु या न सा ॥ ॥ ॥ रु नत्र नृ उा रु मन याद
व गमविन्द या की रु नयाव ॥ १६ ॥ ॥ कि क विष्णु नि सा ॥ १७ ॥ रु नत्र न
नायक ॥ ॥ ॥ रु मिहु सि नृ उा रु कव गमविन्द की रुन ॥ ॥ ॥ सा र वा या
जसः द वि दान रु म वि दान रु रु नत्र नायक ॥ ॥ ॥ रु काला यया न
सा गमविन्द या की रु नयाव ॥ १८ ॥ ॥ स वि ना न्य पि या य नि वि वि ध ना पि

कर्म धर्म संसारि कृया लः कुरु (गविन्द की रू न ॥ ॥ मनन वचन
न कर्म ॥ धर्म नानः ॥ ॐ कृया कायाय (ग विन्द या की रू न याव
ॐ नि ॐ ॥ २१ ॥ यवान गदि म कुरु कः पर्व काल वि (ग व म ४) स निरुन
मि पाय रू ४ कृत्वा (ग विन्द की रू न ॥ ॥ मि व या जून न या या या य
विभवन पर्व काल सः न या या धर्म पाय नील मीव (ग विन्द या की रू न या
दान ॥ २२ ॥ ॐ रुद्र स रू यं न ज नः ४ य नि यु रू म रू वी न त्याय विलय या

निः कृत्वा (ग विन्द की रू न ॥ ॥ ॐ रुद्र न या या पाय म न वः वरु का या या
पायः नील मि वः (ग विन्द या की रू न या दाव ॥ ॥ २३ ॥ ॐ न क उ
वाच ॥ स रू (ग या पि नी नि रू वार व धु उ न नार व ले । न त्याय या रु (ग वि
रू ४ (ग विन्द मि व की रू नान ॥ ॥ धर्म रू ल क दावः (ग न क न रू मि
क रू रू न ॥ ॥ ॥ पापी व स रू म या दः स दा क रू या वः जाय न यः मीव नि
दा या दा या ध रू मि पायः रू प न म श्व न शी (ग विन्द रू व या ल सः नाम ५

गर्विंद धर्क की रू नया दानः ध्याय उ निमाल ॥ २० ॥ यत्पापयो
वन वापि वाद के सम याजि नी गत्यार्प यातु गविन्द गविन्द गिचकी
रुना ॥ ॥ गव्याय धालसाः उ वनसः माचा भा द्य लसः अ ध इ व य
लसः उया ऊ न या दान गुनिः दे य व म भव गविन्द कुन पा ल स नाम गविंद ध
क की रू न या दान ध्याय उ निमाल ॥ २१ ॥ यत्पापयो दे य वी दे म ध्या
कादि य स क्रि नी गत्यार्प यातु गविंद गविन्द गिचकी रुना न ॥ ॥ गव्या

याय धालसाः वन क्रिः क्रि नसः सृ थं संचय या दान गुनिः पार्प व निवः
गविन्द या नाम कायान ॥ २२ ॥ गय म भा उ न या पिय गच्छ ना पिय वा क र्क नी ग
न्या र्प यातु गविंद गविन्द गिचकी रुना न ॥ ॥ दे ल न लः ली स
उ लिः या दान याय ध गु नि पार्पः गविन्द या नाम कायानः गविन्द या की रू
न या दानः रुचि व रु नी ॥ २३ ॥ भ व म धु न रु ली रु म न ता य दू या जि नी गत्यार्
प यातु गविन्द गविंद गिचकी रु रुना न ॥ ॥ स भ न य व नः म धु ल य व न व

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ धनुषिः पापं ग्राविन्द यानामकायान् ॥ ग्रावि
न्द या की लूनया दानः अनिव ॥ १८ ॥ महापापममं खानं भाद ॥ गुफ मया डि न
गत्यापं यागु ग्राविन्द ग्राविन्द मिच की लून ॥ १९ ॥ ॥ नमो भगवते महापापं गुफ
नया दानायः ॥ यत्र भगवत ग्राविन्द धर्म की लूनया दान ॥ धपाप अन
माल ॥ २० ॥ यत्र यामुद मनसा कर्म ॥ समुपा डि न ॥ गत्यापं यागु ग्रावि
न्द ग्राविन्द मिच की लून ॥ २१ ॥ ॥ ग्वगुनिः ऊमू खमननः कर्म

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ धनुषिः पापं ग्राविन्द यानामकायान् ॥ ग्रावि
न्द या की लूनया दानः अनिव ॥ २० ॥ यत्र यामुद मनसा कर्म ॥ समुपा डि न ॥ गत्यापं यागु ग्रावि
न्द ग्राविन्द मिच की लून ॥ २१ ॥ ॥ ग्वगुनिः ऊमू खमननः कर्म
न वाचयमि या दानायः धनुषी पापं अनिवः ॥ ग्राविन्द या की लूनया दान
॥ २२ ॥ यत्र यामुद मनसा यत्र दाना गमं गमं ॥ गत्यापं यागु ग्राविन्द ग्रावि
न्द मिच की लून ॥ ग्वपाप धलमाः ऊ पापमननः भव या दानः याद

कुरुयायाः धनुः प्रियायं अनिव ॥ ३० ॥ दुरुवाक नर्क न धर्मवादा
निमृदिनः। नृत्यायं यातु। गविन्द गविन्द गिचकी रूनाम ॥ ॥ नूनं कुरु
द्वान्दव धर्म र्वमद दायाम द्वा नकायाः धनुः प्रियायं अनिव ॥ गविन्द या
की रूनायान ॥ ३१ ॥ किं त्वं धर्म स कायान्कः पदक यान्क ननिन्नय ॥
नृत्यायं यातु। गविन्द गविन्द गिचकी रूनाम ॥ ॥ धर्म स का सयादा
वः पदक द्वा स इ याया पापः नून्या यया दाया पापः धपायं अनिव ॥

३२ ॥ नक नय न यातु क म का न न स र्म र्क न। नृत्यायं यातु। गवि
न्द गविन्द गिचकी रूनाम ॥ ॥ धर्म उन्म को ननः इ के। रिद वरु
दय कावः नया या पापः धपायं वनिव ॥ ३३ ॥ अय द्वा दव द्वा
गः नक न म न स ग न म। नृत्यायं यातु। गविन्द गविन्द गिचकी रूना
म ॥ ॥ वियरि इव व वसे म न नः स म वषः मया दाया अथवा मनसः मृ
नि स धाया र्थ मया दायाः धपायं वनिव ॥ ३४ ॥ दत्ता देव दि जा नी नी य न या

[illegible]

याह्मिन्द्राविन्दो मित्रकी रत्ना ॥ ७१ ॥ असमयशुभादिदवरा
याह्मिन्द्राविन्दो मित्रकी रत्ना ॥ ७२ ॥ कया
नन्दयका वडमिम्बकायः कयवमभवशीलाविन्दकवयालसुनाम
कायानन्दनमान ॥ ७३ ॥ विनाशायवदवगारायाह्यागुयानकागत्या
पयाह्याविन्दो मित्रकी रत्ना ॥ ७४ ॥ नन्दकावधमदलेमदिमा
कयानगालगायायायः धयायडानमाल ॥ ७५ ॥ वधसंकनडियायनानाका

कादिसंकनगायाययाह्याविन्दो मित्रकी रत्ना ॥ ७६ ॥ गवमन
वयाकिडयायावडामवडधालामखकावनयायाः धयायवेनमाल ॥ ७७ ॥
ययूकवदगीयायकानगीकानन ४ कर्मगायाययाह्याविन्दो मि
त्रकी रत्ना ॥ ७८ ॥ रुसरवकाकायायायकाननः ककाननः याकायायः वन
मान ॥ ७९ ॥ वनरुडकर्मयायदमयाह्याविन्दो मित्रकी रत्ना ॥ ८० ॥
याह्याविन्दो मित्रकी रत्ना ॥ ८१ ॥ वमरुडयाकायायः नन्द

श्रीपुत्रवः स्तुत्यायायाय थयार्थवनमाल ॥ ४० ॥ समन्तरागिनीश
गीपिरोदीर्गद्वन्द्वय ॥ गत्याय्यायु गोविन्द गोविन्द निवेदी केन
॥ ४१ ॥ ववनः स्तुत्यायायाय थयार्थवनमाल ॥ ४२ ॥ यत्याय्यायु मिद्वन्द्व
यु ॥ गत्याय्यायु गोविन्द गोविन्द निवेदी केन ॥ ४३ ॥ दवयावद्वन्द्व
॥ ४४ ॥ अदिनः स्तुत्यायायाय थयार्थवनमाल ॥ ४५ ॥ कूलयागृद्व

कुं कुं गृह्णामीकलठा धनम् । नित्यार्पयामुः । अविन्द अविन्द मिरकीरु ना॥ ॥
व श्रु या रू सः नया प्रादे शु या धन का या या पाप थ पार्य व न मा ल ॥ २ ॥
अरुकि पि गृप् इानी क्व वे नी पाग के च य ॥ नित्यार्पयामुः । अविन्द अवि
न्द मिरकीरु ना॥ ॥ थंकालिः द वः वाक् द भः मामः व वः यमि वाम्या दा
या पाप थ पार्य व न मा ल ॥ ३ ॥ मानायि नी न रु काना का या मि नि दि
गा पि वा । उ कु मे श्व क न ल के श्व पार्य रु य पु ध श्र मि ॥ ॥ मामवद् या

मिसा ३ भावः धवरात्रभाया कदि नमया दा याः या दा या या कसा कयी सुद
लेयापदनीभाच कु माल ॥ ३१ ॥ रुविदासत्रविदुसुदि रु क सायि यभा
पायं नन्नभन नूनं क न य स ० मय ॥ ॥ वका द गि वि द्वा स उ व या प
दत्रा ऊः थ पाय रु यि वः निशु र्य दो ल म म या या धू रु उ या सी पाय थ पाय
वन माल ॥ ३२ ॥ निरु कि या वि की नानी द व ग मि थि व कि न ग न्या य
या रु ग म वि न्द ग म वि न्द गि च की रु ना ॥ ॥ निरु कर्म मया दा याः क व

यूजा मया दा याः रु गि निरु ग म वि या या पाय थ पाय उ न माल रु ग म वि न्द ॥
॥ ३३ ॥ रु गि नी रु गि न यानी निरु रु कि म क व र्गी ग न्या य या रु ग म वि न्द ग म
वि न्द गि च की रु ना ॥ ॥ ग मः क रु रु नः या व वि या ल म या दा याः
या य थ पाय उ न माल ॥ ३४ ॥ व स ग म म नी वा म न क रु व स ग म य रु
क न्या य या रु ग म वि न्द ग म वि न्द गि च की रु ना ॥ ॥ रु उ न व र्म ग म या य

स्य. अस्मिन्नु. नायथकायायायः हि यमश्चरन्मविन्दु नयालसना
मकायानकीरुनयादानधाममाल ॥ ५ ॥ माग्जरुद्रकनयापद
कुरुषु विरुद्रकं गल्याय यातु मविन्दु मविन्दु निचका र्कना
॥ ॥ लमरिन्कायाः शनकायाः दूःशनकायाः धानशनकायाः धार्थिद

दापः ॐ नमाल ॥ ॐ ८ ॥ अधर्मकी रूना ल्यायं कृत्वा कि समुद्र वसा गत्या
 यं यातु ग्मा विन्द ग्मा विन्द मित्र की रूना ॥ ॥ भवनः या क या यः द्वा द्वा या
 द्वा द्वा याः धर्ममं या गु विमः सारवी इ या या यो यः ध्यायं ॐ नमाल ग्मा विन्द
 यानामन ॥ ॐ ९ ॥ सुवृद्धा वा कि गमनस्त उना गमना द्वा वसा गत्या
 यं यातु ग्मा विन्द ग्मा विन्द मित्र की रूना ॥ ॥ सुवृद्धा वा ग या कि उ या या
 धद धे धे या क उ या या या य ध्यायं ॐ नमाल ॥ ॐ १० ॥ सुवृद्धा वा

दिक्कं यायमथ ययानसंरु वम । न त्यापं यातु । गमविन्द । गमविन्द मिचकी रेना
ना ॥ ॥ लू । उ । दामि । उ । लः थधिठ । आदि नः । स्वयायाः । दिः थ । आदि नम
दायायायः थयायव नमाल ॥ ५० ॥ अनमो बु । पि मृन्दे । वायके । यका
ऊनादु वम । न त्यापं यातु । गमविन्द । गमविन्द मिचकी रेना ॥ ॥ ॥ द
वयूजाः । पि नत्रयू । उ । मयासी नयायायायः थयाय । अनमाल ॥ ५० ॥ कथ
सी कथमाना सी । विद्युमाचविर्न च यन । न त्यापं यातु । गमविन्द । गमवि

न्द मिचकी रेना ॥ ॥ वृ । थकथा । द्वा । नन विधिनि यादनः । भवनाखं द्वा
याययायः थयाय । अनमाल ॥ ५१ ॥ बुद्धवेनामामि । थ । गमविन्द । गमविन्द मिचकी रेना ॥ ॥ ॥ धवनिमिच
दि । मृ । न त्यापं यातु । गमविन्द । गमविन्द मिचकी रेना ॥ ॥ ॥ धवनिमिच
ममः । दामधु । मु । न । अथिमयागमविर्न । यायायाय । थयायव नमाल ॥ ५२ ॥
मृ । थ । दयम । रे । व । व । य । त्यापं । मम । वाजि । मम । न त्यापं यातु । गमविन्द । गमवि
न्द मिचकी रेना ॥ ॥ ॥ मृ । थ । द्वा । सी । मृ । थ । उ । द । य । इ । व । व । ल । मः । उ । द

कैययादा गवियायः ध्यायं अनमाल ॥ ४३ ॥ धर्मयति नृपयार्थविरु
साधनयत्कर्म गत्यायं यातु ॥ गविन्द गविन्द निचकीरु नानु ॥
धर्मनम्रयि नृलाकयाक दव या गदं नमः लिमाया यागवियाय
ध्यायं अनमाल ॥ ४४ ॥ गवनिन्दा कर्म यायं वद भासु दि जादिक मा ग
त्यायं यातु ॥ गविन्द ॥ गविन्द निचकीरु नानु ॥ ॥ गव दव भासु वि
द निन्दा यादा यागवियायः ध्यायं अनमाल ॥ ४५ ॥ गव दव भासु वि

कालयु ब्रह्मात्रा याग कं चय नृ गत्यायं यातु ॥ गविन्द ॥ गविन्द निच
कीरु नानु ॥ ॥ पर्व काल इव वल सदानः मवियायः रु याग नि
न भूलमदे यागव ॥ ध्यायं अनमाल ॥ ४६ ॥ ध्यायं अनमाल
ल्यनीयायं ज्ञान भा ज्ञान नृ कर्म गत्यायं यातु ॥ गविन्द ॥ गविन्द नि
चकीरु नानु ॥ ॥ दृङ् नख द्वा दायाः ज्ञान नी च ज्ञान नम ॥ ध्यायं
॥ ध्यायं अनमाल ॥ ४७ ॥ ध्यायं अनमाल ॥ ध्यायं अनमाल ॥ ध्यायं अनमाल

नित्यार्थया तु ग्राविन्द ग्राविन्द मित्र कीर्तनात् ॥ ॥ सुमा वासि
कृदु असागयाया गवः पायः थः पायः डानि माल ॥ ८७ ॥ वनस्य
मित्री नृणां मयत्रा न नृणां कर्म ॥ नित्यार्थया तु ग्राविन्द ग्राविन्द मि
त्र कीर्तनात् ॥ ॥ सुमासि कृदु भवया नृणां नयाया गवः पायः थः पायः
डानि माल ॥ ८८ ॥ वनस्य मित्री नृणां मयत्रा न नृणां कर्म ॥ नित्यार्थया तु
ग्राविन्द ग्राविन्द मित्र कीर्तनात् ॥ ॥ सुमा वासि

कृदु ना वृत्त नययकं वंकाया गवः पायः थः पायः डानि माल ॥ ८९ ॥
॥ नित्यार्थया तु ग्राविन्द ग्राविन्द मित्र कीर्तनात् ॥ ॥ सुमा वासि
कृदु ना वृत्त नययकं वंकाया गवः पायः थः पायः डानि माल ॥ ९० ॥
॥ नित्यार्थया तु ग्राविन्द ग्राविन्द मित्र कीर्तनात् ॥ ॥ सुमा वासि
कृदु ना वृत्त नययकं वंकाया गवः पायः थः पायः डानि माल ॥ ९१ ॥
॥ नित्यार्थया तु ग्राविन्द ग्राविन्द मित्र कीर्तनात् ॥ ॥ सुमा वासि
कृदु ना वृत्त नययकं वंकाया गवः पायः थः पायः डानि माल ॥ ९२ ॥
॥ नित्यार्थया तु ग्राविन्द ग्राविन्द मित्र कीर्तनात् ॥ ॥ सुमा वासि
कृदु ना वृत्त नययकं वंकाया गवः पायः थः पायः डानि माल ॥ ९३ ॥

दानका या यागवड या यथ पाय धानमाल ॥ १२ ॥ कुरु माभव यरु कि दा
द ग्नीये मू ववु मी । गत्याये या रु ल्मा विन्द । ग्मा विन्द मित्र की रु नाग ॥
॥ दाद गाउ य वासस वेवु व धर्म सचु गुरु व यागवड या य । धयाये धानम
माल ॥ १३ ॥ अ कुरु विष्णु दानक स गङ्गा नयमादिना । गत्याये
या रु ल्मा विन्द । ग्मा विन्द मित्र की रु नाग ॥ ॥ धमरु या । धयि लुम
म धर्म या दा या अरु का वरु ध यागवडि या य । धयाये धानमाल

॥ १४ ॥ यमि गाना नु स का य यमि गाना नु स द्धु म । गत्याये या रु ल्मा
विन्द । ग्मा विन्द मित्र की रु नाग ॥ ॥ यमि न धाय धमरु कि रु जा गङ्गा
या व । कृ जा ग या क । मंत्रिक द्वा । धवरु द्वा या या । धवसं गया दा या य
त्रि या य । धयाये धानमाल ॥ १५ ॥ यज्ञा नाम यमानु यन्तु मी या मर्क व
यन् । गत्याये या रु ल्मा विन्द । ग्मा विन्द मित्र की रु नाग ॥ ॥ धव गुरु
वा द्वा । धका नि या म अ यन या दा य गवड या य । धयाये धानमाल

॥ १४ ॥ निष्ठुय यादु मे ^५ निन्दे या नु या म के । म त्याये या रु ल्म
विन्द ल्म विन्द मि च की रु ना ॥ ॥ स दो काले उ करे क य र्वे झा
दा या ग्य वि या ये । थ या ये हो न मा ल ॥ ११ ॥ ६ द्वा य द्वा उ व र
सा मन सां क मे ल्म क मे । म त्याये या रु ल्म विन्द ल्म विन्द मि च की रु
ना ॥ ॥ मि र्वा न न द्दि न व न न क मे न मन न न द य का या य थ
या ये व न मा ल द्म विन्द ॥ १२ ॥ अ य र्था के व न द्म ला य न या या
र

म के क मे । म त्याये या रु ल्म विन्द ल्म विन्द मि च की रु ना ॥
॥ रु मि स व स व य या नि या ब हि म या दा या ग्य वि या य थ ६ या
य उ न मा ल ॥ १३ ॥ अ हि मे चि नि मे वा उ न ॥ या नि नी रु मि वा
मि नी । म त्याये या रु ल्म व न्द ल्म व न्द मि च की रु ना ॥ ॥ रु मि स व स
व य थ द्वा य नि या ब हि म या दा या द्वा या डा थ या ग्य वि या य थ या ये
उ न मा ल ॥ १४ ॥ क मे ल्म मन सा वा या य त्याये समू या दि न मे । म त्याये या रु

भावन्तु भावन्तु मित्र की रूनाम् ॥ ॥ कर्मण मनन वयनन गविपाय उरु
नायादायाय ध्यायै उ न मान ॥ ८१ ॥ अ मा ग स्यायुद रु स्य वै भाषी कारि
की गना । ग स्यायै यानु भाविन्द भाविन्द मित्र की रूनाम् ॥ ॥ वै भाषन का
रि क ल भाल मद्रु सा सा दानमवि चाया गव्याय ध्यायै उ गदी श्व
ल वन माल ॥ ८२ ॥ कृत्वा ययुद रु स्य वै वि गाम दे श ग स्यायै
सानु भाविन्द भाविन्द मित्र की रूनाम् ॥ ॥ अजायनि स न वि चाय रु

रु न काया गव्याय ध्यायै व न मान ॥ ८३ ॥ मा ग रु मृ वि रु वृ च यत्या
यै स म्या र्जि म । ग स्यायै यानु भाविन्द भाविन्द मित्र की रूनाम् ॥ ॥ मामव
वृ या क स वाम सादा या गव्याय ध्यायै उ न माल ॥ ८४ ॥ ग वृ कृ दा रु
वृ यायै अ मा वा स्यानु य रु म । ग स्यायै यानु भाविन्द भाविन्द मित्र
की रूनाम् ॥ ॥ अ मा वा सि कृ कृ सि मा धे दा या गवि पाय ध्यायै
यै उ न माल ॥ ८५ ॥ ग र्दि गाम न य स्यायै यायै रु स्या उ यायिनी ।

गत्यायै या तु अविन्द अविन्द मित्रकी रूना ॥ ॥ निन्द्यायाठग
या अन्ननयाम् यापि या यावान्नन अरुना याये अत्रियायः थ
यायै उानमाल ॥ ६४ ॥ अथ धादि सम यायै रु दह त्या सम अयन
गत्यायै या तु अविन्द अविन्द मित्रकी रूना ॥ ॥ अथ दह त्या
सम अद याय रु दह त्या उा तु त्या अद यायः थ यायै उानमाल
॥ ६५ ॥ निषिद्ध दिवस यायै रु दि न द न धावन । गत्यायै या तु अ

विन्द अविन्द मित्रकी रूना ॥ ॥ यादा अमा वासी कृष्ण आदि ग
वाच कृष्ण वाया या या अद याय ॥ थ यायै वनमाल ॥ ६६ ॥ अथ कायय
द्वय त्यायै रु दि न द न धावन । गत्यायै या तु अविन्द अविन्द मि
त्रकी रूना ॥ ॥ कालमखल वाया या या अत्रियाय + थ यायै व
नमाल ॥ ६७ ॥ विधि वायु नुयद के विधि वायु नुयलु री । गत्यायै या
तु अविन्द अविन्द मित्रकी रूना ॥ ॥ अविधिन द्वाया

याः अविधि न याका यागवियायः ध्याये आनमाल ॥ २१ ॥ अका
ल वाध वाद ॥ गायकृ नीयु छमि रु ना । गत्याये यागु अविन्द
अविन्द गिच की रुना ॥ ॥ कालमखत्र मखुय मस पछा नू
का याका व याका न इ वयो य ॥ ध्याये आनमाल ॥ २२ ॥ अगगा
का मगी या गुं मि गेच विमूखी रुनी । गत्याये यागु अविन्द अविन्द गि
चकी रुना ॥ ॥ मया गुवल अनागत्र याका या मि रु आमडा

काया अविद्यायः ध्याये आनमाल ॥ २३ ॥ नदरु नदु नी उ रुना
वि मदि उ दे व ना ॥ गत्याये यागु अविन्द अविन्द गिच की रुना
॥ ॥ दानमवि सा काममया सा उ वमया सा दे वयु आमया सा वाक
नीयु आमया सा याका यागवियायः ध्याये आनमाल ॥ २४ ॥ अकोनी
नय वि या र्ण शानि नी दे व श्री धम ॥ गत्याये यागु अविन्द अविन्द
द गिच की रुना ॥ ॥ शानि याग वो अमया का या मयदि या याग

प्रियायः थयार्थे डानमाल ॥ २५ ॥ मुकुं श्री जमवत्सा यादु नी श्री रं न
आदधि । गत्यार्थे यागु (मविन्द (म विन्द निचकी रं नागु ॥ ॥ यामद
साया ॥ दद ५ धवि ५ धव ५ नया यागु ५ याय ५ थयार्थे व नमाल ॥ २६ ॥ ऊ का
द व ले या नी क रं मूल क रु द (६) । गत्यार्थे यागु (मविन्द (म विन्द निच
की रं नागु ॥ ॥ माला झा क ५ द व थो क इ या या ५ गा ड ल न या या ५ या
न ५ न या या ५ ग्व वि या य थयार्थे डानमाल ॥ २७ ॥ यि गृही द व गानी

चय ५ यय रु मि मूल क रु । स या नि न व कं धा रं या य दा रु न रं प्र य म ॥ ॥ ॥
द स ५ द व या ग ५ धा रं ५ गा ड व ५ का व द्र ५ ग्व व ल ना य धि वी स नाम का
व द म ५ न व क ५ व नि व ॥ २८ ॥ वृष ली गाम न या रं थ ५ आ दि ग म न रु
न ५ गत्यार्थे यागु (मविन्द (म विन्द निचकी रं नागु ॥ ॥ ध व रुं स
न रु म या सी ५ वा धा व ग या द्र या क ५ थ ५ या या ५ या या ५ या या ५ थयार्थे
डानमाल ॥ २९ ॥ वि ना द न रं मि ले वी यि यि गृही न रं (६) रु रं । गत्या

यं यातु (गविन्द गविन्द गिचकी रूना न॥ ॥ क (गलइलसी + हा
म लइलसी मय यकं + गयु छ या टाया गेविया + थयार्प अनमाल ॥
॥ १०० ॥ मोनकान वसु वसु यन्मी नै नम याम कर्न । गत्यार्प यातु (गविन्द
(गविन्द गिचकी रूना न॥ ॥ गन ना न वायम भव धाम + छनना
नवा टाया गेविया य॥ थयार्प अनमाल ॥ १०१ ॥ निषिद्धाना नु वरु ना
यम या रु द्वा ही कर्न । गत्यार्प यातु (गविन्द गविन्द गिचकी रूना न॥ ॥

नयम भव वरु न याया गेविया य॥ थयार्प अनमाल ॥ १०२ ॥ विदि नी क मो उर
अ कर्न या विदि नी मया । गत्यार्प यातु (गविन्द गविन्द गिचकी रूना न॥ ॥
यायमाल कर्म मया स्या । थव कार्य या टाया गेविया य॥ थयार्प अनमाल
॥ १०३ ॥ क र्या नीय य वि र्या । गयम यायाय स शिर्न । गत्यार्प यातु (गविन्द
(गविन्द गिचकी रूना न॥ ॥ यायमाल गुलि ना ल ना या गेविया य॥ थया
य अनमाल ॥ १०४ ॥ रुका नीय य वि र्या । गयम यायाय मर्दि नम् । गत्यार्प या

धनरुद्र न जाय भयानक कुविउलाचनार्थ गृह नीय त्यापं रुदनश्च
॥ न त्यापं यागु ग्मविन्द ग्मविन्द मिचकी रूनागु ॥ ॥ गजाङ्ग याव धव
भवक याधनरुद्र न कानयाय उत्पन्न इव रुद्र न दृथिवीस थवश्च याय स
मुलका याया रुसंसावया थाकन थपायं डानमाल ॥ ११० ॥ यावमात्मय
संसायाय न निन्दा रु नीच यगु ॥ न त्यापं यागु ग्मविन्द ग्मविन्द मिचकी
रूनागु ॥ ॥ थव न धमकि रु र्व द्वायाया भवया न र्व गज यागु

६ याप थपायं डानमाल ॥ १११ ॥ नव काव रुव ल्युयं डनम काठि रुद्र
गु ॥ न त्यापं यागु ग्मविन्द ग्मविन्द मिचकी रूनागु ॥ ॥ नवक नवक गुप्ता दा
यु डनम काठि सरीचय यादायाय थपायं डानमाल ॥ ११२ ॥ गु मि स्मृ मि युना
॥ ॥ वृ स विरि येलु की रू नी ॥ न त्यापं यागु ग्मविन्द ग्मविन्द मिचकी रू
नागु ॥ ॥ थद स स्मृ मि स युना स ॥ ६ वि य नि स न द्वा दाव मया
ग्यय याप थपायं डानमाल ॥ ११३ ॥ न नासिया न क ला के रू ली रू रू

उमरु या गनगकमिना ॐ नु रुत्वा गोवन्द की रुना मु॥ ॥ सज्ज
य गावस मरुमधुवस मव वीरु विकर्ध ८ इ मसी मी निव सायम
इ रु म म गोविन्द यान म नया कन ॥ १४ ॥ या कु भव विमुं था येया
य का के याठ र्छिना वा द्याय ही ४ रु रु की प्र दा न दिना म रे ४॥
॥ सनानी न काय र मय काठि रु रु कि या य य व के वा द्याय रु रु द नि
॥ य रु मया म मी धि ८ आसी ॥ १५ ॥ गोविन्द को रु न नाम रु वा रु रु



हवनजीवनडे ॥ पाश्चाय ॥ कृष्णनु मङ्गलं हवनं प्रवर्तमानं ॥
 देह ॥ ॥ यमिदं वनतानु ॥ ॐ तत्र पूजया ॥ ल्या ॥
 तयं विदुषी ॥ ॥ रवचनस्य सूर्यस्य ॥ ४ रवचन ॥ ४ रवचनस्य पितृनिप
 न ॥ ४ रवचन ॥ ४ रवचनस्य सूर्यनरुत ॥ ४ रवचन ॥ ४ रवचनोपनिषादिति हारवचन ॥



रव
 चन
 सूर्य
 सूर्य
 सूर्य

आशा नरु कृषि	
५५३	

ASHA ARCHIVES

यायदकोटः श्रुताः नावर्धः दुःकाववनिवः दकायार्थः धर्धकै यम
श्रममहादवर्नः आकादयकादवः ॥ ११२ ॥ रुद्राश्वेर्वद्रुहिमांते ४
० भेयो नरुलं सुनी। सुर्वेकनगु नत्यर्धं। गविन्द्रा रवायुकीरुनी ॥
॥ श्री रुद्राः जुनकका उदः धनसमस्तः यदयायागुलियुध्यः रुलधाल
उलिरुल गविन्द्रा कीरुनसुवथः रुयालयलयान उमियुध्यः ॥ १२०
॥ यरुलीया ० भेवने ४ युवा (६) ययुकीरुनी ॥ गलुलीया ० भेकांते

गविन्द्रा रवायुकीरुनी ॥ ॥ गुलिरुलः युवा ६ दकायवयाया
युध्यदमः उलियुध्यः धर्धगविन्द्रा रवाकांते यउयानलायिवः ॥ १२१ ॥
गावत्यायानिनिद्रा गिउमकाटि रुगान्यायि। यावन्नयवमउनु गविन्द्रा
रवांमहासुवम् ॥ ॥ यवतना गविन्द्रा रवाकांते गुधगुनार्थे कामववः
उववना मनसा याऊनाकाटि मयादा यायनमनाल गयिवः ॥ १२२ ॥
लिखिनीयदु के पायगावलि रु निरु मिया। यावन्नय ० भेसु

॥ अविन्दार्यमहामुद्रम् ॥ ॥ उममाजायाः पञ्चि सध्वं वनमाया
याः ल्याख्यार्यमयिवः स्वयं वनमा ॥ अविन्दार्यमहामुद्रम् ॥ मय
उयत्रः थ ॥ थधकं उममाजा केदा ॥ १२३ ॥ नावदोगरुयै निर्यथोम
मिउलसमुर्व ॥ यावन्नय ० नयसु अविन्दार्यमहामुद्रम् ॥ ॥ उ
वलमा लोमया रुयठयिवः सदाः स्वयाः मियाश्वायाः अवनमा
मयवयवः अविन्दार्यमहामुद्रम् ॥ १२४ ॥ नावदुयैदविदुस्यमाव

ॐ नमो रुवी। यावन्नय ० नयस्तु । गविन्दार्यमहासुवे ॥ ॥
 अत्र नाः दमिदु रुय अला नाः ॐ नयारुयः श्वर भामथाव
 यवः । गविन्दार्यमहासुवे ॥ १२७ ॥ दन्नि मिहानि रुयाल नाऊ
 ॐ देव ऊं रुय । यावन्नय ० नयस्तु । गविन्दार्यमहासुवे ॥ ॥
 नकात्र नमदः ॐ नाऊ नाऊ या रुयः देवयाः रुयः श्वर भा ॥ १३
 ॥ नमस्त्यु गने ला के रुयः दा दानदय । कलीय ४ य ० नयस्तु

ॐ विद्यास्वामि हारम् ॥ ॥ ॐ श्रीमद्विद्याः ॐ हला कला रुच
ॐ दत्तः निःशब्दः कविः कुमरः ॥ ॐ श्रीः कुनेन पात्रयत्र ॥
विद्यास्वामि हारम् ॥ १२ ॥ सर्वपापयुगमर्तः ॐ विद्यास्वामि हारम्
दीप ४ य १० ले कु काले कुनेन कामिनी रुचि नदि ॥ ॥ समस्त पाप
रु म कः ॥ ॐ विद्यास्वामि हारम् वसना नथात्र यत्र उरु वेत्र
ॐ यानेन कामियाः रुचमद ॥ १२ ॥ लिखि नानि य १० ॥ ॐ

यापानियमः ॥ १२ ॥ य ४ य १० ले कु काले कु ॐ विद्यास्वामि हारम् वी
॥ ॥ ॐ श्रीः नयाः ॐ विद्यास्वामि हारम् वी ॥ १२ ॥ य ४ य १० ले कु काले कु
ॐ श्रीः ॐ विद्यास्वामि हारम् वी ॥ १२ ॥ य ४ य १० ले कु काले कु
ॐ श्रीः ॐ विद्यास्वामि हारम् वी ॥ १२ ॥ य ४ य १० ले कु काले कु
ॐ श्रीः ॐ विद्यास्वामि हारम् वी ॥ १२ ॥ य ४ य १० ले कु काले कु
ॐ श्रीः ॐ विद्यास्वामि हारम् वी ॥ १२ ॥ य ४ य १० ले कु काले कु

४५५ गाम लक्ष्मी मुष्टि कर्षे निविदुधा कलो (गविन्द की रू नया) ॥
समस्त गुरु सी के इयिवः समस्त इयिवः पिमेव लो कर्षे मुष्टि इयिवः
दवयनि कविज्ञ गम (गविन्द की रू नया दान) ॥ १३१ ॥ (गविन्द नि
कृ भावा प्र विदुधा नी मे नी सिवा वि क स नि म दी या ल य था य प्री रु क
ला दय ॥ ॥ (गविन्द ध के उ ला ल या रु नी दवयामनः च ग क नि
वः ग (ध धा साः य य जाः स य उ द य इ व (थ ॥ १३२ ॥ सिद्धा नि सर्व

का यो धिम म सा चि नि ग न्या यो (गविन्द नि कृ भावा प्र मुष्टि न्य रु
नि रु मि य ॥ ॥ सिद्धि इयिवः समस्त कार्यः मनन रात्र य र्कः (गवि
न्द ध के उ ला य यार्कः रु ना जा ॥ १३३ ॥ दि द्वा क लि म र्द यो शु न रा
स्यी रु मु व न श्व रा ग ना मो य न म स्का नी रु ला (गविन्द की रू नी ॥
॥ ॥ ला ना कः क वि या र द्वा य स धू व न मि र्द य स ना र्कः रु ना जा उ
नः व क रु ग द्वा ॥ ६१ (गविन्द की रू न या ग अ द्वा य न य ॥

१ॐ नमो नमो ॥ ॐ निवद्ववद्वीगद्वगान्धकावद्यात्रा निद्यात्रयलया नि का
लः ॥ पा नारु व ३ ४ यत्र मा तया गीगमनिमानन सखयदाय ॥ १ ॥ असात्रसं
सात्रविभाचनाय सर्वस्मने सर्वेशु धयदाय । नमो स्तुतनाय मरुध्वनाय तैला
कनाथाय वत्रयदाय ॥ २ ॥ असात्रसंसात्रविभाचनाय सर्वस्मने सर्वेशु ध
यदाय । नमो स्तुतनाय मरुध्वनाय तैलाकनाथाय वत्रयदाय
अननकत्रय वदिरु लि पृथा अननक लक्ष्मी द्विदशासि तुष्ट ३ अननकरु

गमनु ददासि लाके अमनकत्रय कूत्रमय दृष्ट ३ ॥ नेवशयुष्याम्वत्र मदीय
विचिगुर्गंधादिसमकयुजा । गृहा वदवंगमभायनीता विचिगुर्गंधादिसमकयुजा
य ॥ ४ ॥ नमो स्तुतनाय सरुमुसु र्नेय सरुमुयादा कशिनात्रवारुवा । सरुमुनाम
पूत्रयाय गमलेने सरुमुकोटी युगंधात्रिदानम ४ ॥ ५ ॥ नमो नस ४ कात्र ४ वामनाय
नात्राय लामिग विरुमाय ॥ ६ ॥ रवचका सिगदाधनाय । नमो मुने र्मेयुषु धारुमा
य ॥ ७ ॥ अद्याय वेद निलयाय मरुदनाय । सिहाय देत्यनिधनाय तुष्टुजाय ॥ ८ ॥

नरुर्ध्वगुर्वी। पीताम्बरं कात्रमादिदेवं मात्राध्वं कं धावमरुति ॥ १४ ॥ रुद्राङ्ग
वैवदविदाम्बमिष्टयौ गमत्सुर्कं मीर्यविद्यावदनि। आदित्ये चन्द्रा। शिवसुपुत्रा
वै। पुरुषयश्चयुगमात्मरुर्ग ॥ १५ ॥ अननकगुणत्रयाय विष्णुत्रयधराय च। न
मामहात्म्ये दहाय अनन्ताय नमः ॥ १६ ॥ नमोलाकहितार्थेय नमः ॥ १७ ॥
परुवाय च। ममाः ८ मं सान्नाय नमः ॥ १८ ॥ अनन्ताय नमः
सुखं रुक्मिणीय दाय च। निमेषानं केत्रयाय रुद्रिहं दायकात्रि ॥ १९ ॥

नमोस्तु ननकत्रयाय सर्ववसुपुदाय च। नानानन्दप्रभादाय ययनमात्मस्वतृपि
॥ २० ॥ दिविवाहविद्याममासुवाभानत्रके वानत्रकानकयकार्म। अतधी
त्रिगमानदात्र विन्दोचत्र। निगमनसायिचिन्तयामि ॥ २० ॥ कर्मलामनसावाच
रुगर्गोन्नान्यागमिर्मम। अनन्तप्रवर्तुगार्ना। रुद्रास्यप्रमथत्र ॥ २१ ॥ नान्यद
यामिनरुजामिनवाध्यामि। नान्यदयामिनः ॥ २२ ॥ निचिन्तयामि ॥ २२ ॥ नृक
वशीयचत्रधौवृजमादत्र। धीधीनिवासपूत्रधौकमददियास्य ॥ २३ ॥ अ

यथा धारु सा लि किय न रु नि र्ग मया । दा सा रु मि नि मा र्य क्का रु म स्य य
न म धन ॥ ॐ नि श्र न क सा य स म क ॥ ह रु म ॥ पा ३ ॥

ॐ नमः श्री वि पू न सु न्द री स्य ॥ ॥ श्री या व द्य वा च ॥ रु ग व न् रु षि ना म स वि षि ष
क नू लानि धा य द्या पि पु न सु न्द यो म नु ना म स रु म र्क ॥ पु न के ला णी शि ख न
पु रु ष म नु म र्दि ना ॥ श्री लो क न य उ द वी म नो क्ता व र्गो धू ना ॥ द्य य या के व
ल नो थ न न नो के गु म र्दि मि ॥ ॥ श्री ॐ श्री श्व र उ वा च ॥ म नु ना म स रु म र्क उ क थ
या पि व न न न ॥ ग म य नी र्य य त न धृ तानि र्य म प्र षु त्री ॥ ॐ अ स्य श्री नि
पू न सु न्द री स रु म ना म नु ॥ ग म ॥ ॥ श्री म रु द व स वि श्री वि पू न सु न्द

त्रीदवता ऊरुदु पुन्य ४ सर्वकामनार्थं जयद्वि नियाग ॥ ॥ मूरुग
सूदवीसिम्हा सूषमासूषमावती । मनाज्ञासुरसारम्या । सा रनाललिमागि
वा ॥ कान्का कान्कि मेति कान्कि त्रिनामामेनात्रमा । कल्याणी मूरुगदद्याद
शलाहदयंगना ॥ मूरुद्वारमणीदक्षा । साध्वी वाध्वी सर्मगता । वामाहि क्षा
वती रुया । कमनीया गि कोमला ॥ सा राहि नूयाम धुवा । मार्त गीमदिवात्मर्क
॥ मूरामाशा लिनी सीता चन्द्र आत्मो सुशी गला ॥ मनीना नीम हामाया । मार्त

गीमदिवात्मिका । महालक्ष्मी महाशक्ति मेरायवस्वतू पिणी ॥ मारुश्वरी
महानन्दा । महानन्दविधायिनी । मानिनी माधवीमाध्वी मुखरूयामदाक
टा ॥ आनन्दकन्दा विजया । वेदशी चित्स्वतू पिणी । सुयरा कोमुदी कान्का । वि
न्दनादेस्वतू पिणी ॥ कामेशी काल कलिनी । कामदा कामवधुवा । रुनु एता च
एता च एता । वाम एता मूणुमालिनी ॥ अणु नूयाम हा नूया रुन शी रुवन
श्वरी । विद्या विचित्रा चित्राङ्गी रुनु गको कूलश्वरी ॥ चेतन्यतू पिणी नित्या ।

नित्य नित्य सनातनी । की कत्री कृष्णलीलात्री च त्रिवीरु र्म रुवा ॥ उमादि
नीका मयगी सुय सना सुया ज्ञेना यत्र मानन्दिनी सदा यरमा धेस्वयुपिणी ॥
आ गश्वरी या गवूया हं सिनीयत्र हं सिनी । कलाकल वगीत्रका सुय म्नावले
चारिणी ॥ करंध निलयासूक्ष्मा मयय निवाशिनी । कालासुमालिनी माया
वय एया वय दावना ॥ विदु मारु विशालाक्षी विशिष्टा विश्वनाथिका । चंद्र
वय विश्ववय्या विश्वा विश्व विहा विनी ॥ विश्वाक्षी सो विश्वशिवा विश्वत्र

ध्या वि क श्वरा । मद स्विन्नामदादिना माननी मानव द्विनि ॥ मादिनी मादिनी
माया मदावा समदाशिया । मदिनी सदिनी माता । मदिनाक्षी मदालिषा ॥ मदात्मि
कामदासारा । मेद विंदु कृतादना । मूलभूता महामूला मूलाधार निवाशिनी
॥ सिंदूररकारकाक्षी गिन्या गिगुणात्मिका ॥ वसिनी वा सिनी वाणी वा नुणी वा
नुणी प्रिया ॥ अत्रुणातनुणी रामा । रामिनी वद्विवा । सिद्धा सिद्धेश्वरी सि
द्धा सिद्धावान् सिद्धमार्का ॥ सिद्धा द्विगा सिद्ध विद्या । सिद्धाया सिद्धिर्मम

गा ॥ वाग्नुवावाक्कुदावैद्या वाग्मयीवादिनीवदा ॥ त्वरितासाहवाहय्या त्वदयि
प्रीतिरात्मिका ॥ अमलाकमलावासा कमलासर्वमंगला ॥ रुग्मदवाहग ४ किन्ना
रुग्मिनीरुग्मालिनी ॥ रुग्म ४ युदाहृग्मनंदारुग्मशीरुग्मनायिनी ॥ रुग्मत्तिका
रुग्मवासा रुग्मरुग्मनिर्यातिनी ॥ रुग्मवहीरुग्मराक्ष रुग्मद्रा रुग्मवाहिनी ॥ रुग्म
गतिस्त्रिदिनीरुग्मरुग्मर्गरुग्मर्गहिनी ॥ रुग्मर्करुग्मरुग्महोरुग्मवैद्यारुग्म
यपद्रुय ॥ रुग्मातारुग्मकूत्रारुग्मगुक्कारुग्मश्वरी ॥ रुग्मगहारुग्मरुग्म

यानिरुग्मलया ॥ रुग्मालारुग्मवामारुग्मद्रुदाहृग्मलसा ॥ रुग्मविरास
दुक्किन्नो नित्यकिन्नोमददुवा ॥ सकलानिष्कलोकातीर्ककालीकोलराषि
णी ॥ कीलिनीकमलाकाशी कमलाकमलावर्गी ॥ मन्त्रात्मिका मंगमाता मनुगर्मा
सूमन्त्रिणी ॥ पृथवाणसुखाविद्या पृथ्विनी पृथ्वद्विनी ॥ वक्रेश्वरीमहाव
क्रा पुराणपूरवासिनी ॥ रासुराहुरवीरासा रुद्रकालीकुलांगना ॥ गीर्वा
णीगीयति ४ गेदीगिरिछागिरिसंगना ॥ दसात्मिकादसासादावसर्गदावसावर्ह

॥ कांतिनीस्यंदिनीकाम्याः कामनाकामचारिणी । विद्याविधाविदिविदा विश्वा
स्य विविधाधिया ॥ सर्वोद्भूतसुन्दरीसर्वोत्तमा लावण्यसूरिदेव्या । चण्डलाक्ष्मीचण्डिका
चण्डिकाचण्डिकासिनी ॥ महामांशामन्दमयीमलियूत्रसमोदया । नागसुनागान्तर
ली ॥ ॐ कृचापामहायाशाः शुरुदापियदायिनीः । सर्वदासर्वजननीः सर्वदासु
र्वर्जननीः ॥ सर्वसिद्धिर्माहायाया सर्वथागयसाधिनी । महानुरावामाहन्दीः सर्व
शीर्ष्यावनी ॥ आत्मविद्यामहाविद्या उद्भूतिविद्यायशस्विनी । विश्वेश्वरीति

वागध्या । शिवानन्दा शिवामिका ॥ अनारुणकुनिलयानिरुधानीष्टनीर्मही । नि
वोद्धवृषिणी निर्लिप्तिलालानिष्कलायदा ॥ श्रीरुलाशिवलाशिव्या श्रीमदशिववृषि
णी । यराकुल्लिनीकुडीकुटिलाकुटिलालिका ॥ महादयामहीवृष्या महिमा महि
तामही । शिवैवेत्री सर्ववृष्याविद्यामायादिविल्वत्री ॥ सूर्यमल्लमक्षस्त्रा शिव
राक्षसवर्त्तका । सत्रलिष्टमनासूर्या सूर्यमातामरुषला ॥ सुक्ष्मवासुक्ष्म
पासुक्ष्मसंविक्लिप्तवृषिणी । अमृतसत्यसंकल्यासत्यासद्वर्त्तुदिनी ॥ ॐ कृ

शक्ति ज्ञानशक्ति ४ क्रिया शक्ति ४ पिर्यं क श्री । निलया निलयानंददा सुश्रुत ज्ञानस्व
 नृपिणी ॥ सत्रला सत्रला सात्रा सागत्र स्या सत्र स्वमी । यत्रा यत्राय लभ्य द्या यत्रा निष्ठ
 यत्रा यत्रा ॥ श्री कत्री श्री मती श्यामा निवयो निष्ठु रुद्र लक्ष्मी । नित्रानन्दा नित्रारथया
 निर्वृद्धा निगुल्लसिका ॥ वृहती वृहती वाक्की वक्ता ली वक्ता दायिनी । धर्मि स्थिति
 निर्मम निर्मम क्षम क्षम सुनिष्ठ निष्ठ निष्ठ ॥ सधनं दामसं वा धाम सर्वे श्री राग्यवर्द्धनी
 । नित्रस्थया नित्राकात्रा दृष्टिनी रूद्रिनी त्रिनि ॥ शंगदा कमला श्री डी डा विष्णी

दारुणी सुनिष्ठ कुंडली कुलम क्षम क्षम नांठी श्री निष्ठिया ॥ कुलाक्षी लक्ष्मी
 कुलानंददा वाधा वाग्मादिनी मगी । उमापिय वृकालक्ष्मी त्र कुला कुल दीयिनी ॥
 विश्वलक्षिका विश्वया निविश्वसं मान नृपिणी सं दत्राक्षी सत्रा वासा सत्रवय
 सत्रवयनी ॥ सवर्ण वर्ण सत्कीर्ति स्व लक्ष्मी वर्ण स्व नृपिणी ॥ ललिता क्षी वलि
 सा श्री नक्षत्रा दारुणी दारुणी ॥ सां रुवीर्नदिनी नंदी नंदानंद स्व नृपिणी ॥ नि
 वृद्धा । मदिष्ठा सत्रमदिनी ॥ विष्णु साक्षी विष्णु नृपा विविधा धामः

रुधायिनी । डाननी विश्वजननी विश्वनिष्पन्नितायिनी ॥ रुमरश्चनिल
या निष्ठानिर्गुणा गुणवद्विनी । द्रष्टृस्वारुर्वेनशानी रुवनंरुवेनात्मि
का ॥ विरुतिरुतिराह गिरुतिरु गिकाविटी । ॐ शमी श्रीगी रीव
शमी नीसर्वदायिनी ॥ रुवानीरुविनी रासा राखगीरुगराविनी । ॐ ह्य
य निलयापद्मस्तत्रात्यकि सत्रात्मिका ॥ अ विन्दूतूपो विंदूगा विंदू वि
दू विरुष ॥ यज्ञा यज्ञावणी पूष्ठा स्वाधि स्मानसमा ध्याया ॥ सूक्ष्म तूर्य

यत्रानंदस्वात्मस्त्वचित्संयीति वा । पृष्ठुनन्दामहापृष्ठुमदयू लिङ्ग
लाचना ॥ भवेत्तु नृत्तु कान्ता मदप्रक मनश्चिनी । अ नन्ता अननग मेहिमा
नित्यह फा निर्वजना ॥ अचिन्त्यप्रक विंशत्यर्थ विंशत्या चिन्त्यस्व नृ पिपी
। उगत्तयी उ गत्ताता उ गत्तात्रा उ गद्गवा ॥ आद्यायनी शिवानन्दक
टस्त्वास्तनू पिपी । ज्ञानगस्या ज्ञानमूर्ति निनी ज्ञाननू पिपी ॥ श्वच
त्री श्वचत्री मडा श्वचत्री यागनू पिपी जिनाथनाथ प्रथमो नानाया

ननुपिणी॥ अमृतदावासु धावासासु धाविंदुसमाप्नुता॥ काकिनीकमला
वासा पावेतीयाननुपिणी॥ मिथवर्षे धावमस्वीत यनीदीयनीदिना
मकनामकनाकावासा धावयासु धामयी॥ देरुवादेरुवाकाः देरुवा
काशमधुग॥ मंगला मंगलफनी महामंगल देवता॥ मांगला दायिनी मान्या
मैय मंगलनुपिणी॥ स्वयकाशमहासु त्रया राखतीरुती ननुपिणी॥ का
यायलीकलीवासा पूरु कामायजी श्विनी॥ नादवासा म निलया नावाय

धमयीरुता॥ भाद्रमागे विधानका विविंयात्यकिरुमिका॥ अनरु
देवनावा धादूष्यायादूत्रनि कुमा॥ अद्विदाका महासिद्धा क्लानदी
माया दायिनी॥ स्वाध स्वाहासु धामा दासुर्व धामदमदिता॥ निर्वोषदा
यक श्रेश्ठा शर्मिष्ठा सात्रदा शिता सुवर्षे लासुना वा धासुद्धुस स्वाधुना
श्रया॥ सुनिष्ठु निमयिष्ठु त्या सुनिष्ठु या सुनिष्ठु यिया॥ कामत्रयाका
मकपी कालघ्नी कालनुपिणी॥ ॐ कावेगर्ग शीकावीर्क काली काल

नृपिणी। विष्णुयन्त्री विद्वधार्थ विधिसू विध्वर्व दिना ॥ विश्वर्व आ विनावीना
विश्वयू विश्वत्रयिणी। गीललखा गीलर्व ती गीलरू गील नृपिणी ॥ उ
गी यानीषद्वि धानी उकिनी उकिनी यिया। विधानी वधगुटिको निजनी
निज नृपिणी ॥ जालंधरी जगत्तु निज गती जाहली जनि। यशकि नीस
नसाना संधामरू लु सदा गिवा ॥ सु वनीसु त्रिना कावा सु वनीसु
नृपिणी ॥ गिवदू निगिव ४ श्लेषा गिवरू गिव नृपदा ॥ नाकिनी

नमनी नामात्र उनीत्र उनीकया। विश्वरूत्राविन विष्टा विधायी विधिवल्ल
रू ॥ विश्वरूत्रा निविचिगार्थ विश्वया विश्वरूत्र निदा। विश्वन्तिका त्रिकाव
या विश्वयानि विचुदु लो ॥ विश्वयानिर्महोयानि कर्मयानि प्रियंवदा
। रुकिनी रुकिनी सोम्या रूत्रा हि लीत्रा गरुत्रिणी ॥ श्रीसात्रा श्रीयदा
श्रीश्रीरूत्रा श्रीयत्रा श्रिया। श्रीकत्री श्रीमती श्रिया श्रीय लीया गिवेश्व
त्री ॥ कामेयिया कामदूनी कामगिर्या लया स्त्रिया नृदात्मिका नृद

नित्यात्र उक्तं न्यात्र जसला ॥ वैकात्रया उष्मां गच्छा रेत्रवा ह्लादिनी हरा ॥ कु
 त्रदेहानुगमनाथसु ॥ ४४ ॥ विदुः समयुगा ॥ काकिनी कमला वासा पार्वती यात्रवृषि
 षी ॥ मिथवर्षा यात्रमूर्खी गयनी गायिनी दिना ॥ मकत्रा कामचकुशी महामिनि वि
 भादिनी ॥ उत्तकान्तक ॥ शुष्मा डी कात्री चक्रनायकी ॥ वषट्कात्री त्रुडवा मूर्छ
 रुकात्री सी गरासवा ॥ गत्रु जी गत्रु जी ऊष्मा स्वगता वक्ष्या विषी ॥ कृष्ण
 वाहिनी कृष्णकी वत्री कमला यिया र्विउ ध्वनी च लु त्रुया यव लु च लु मात्रिका ॥

कं कात्रयती काल लु कीमात्री कामवल्लरा ॥ यानानुयायानस्मात्ती मत्रुया
 रुयायरा ॥ त्रिकाचलुस त्रानन्दानिका लमयान न र्विना महाकुष्मा कुतुपी
 नाकं कालकूल गयिना ॥ सर्ववर्षा सर्वलुसा यत्राम्गमहा लुवा यान्त्र लुवा
 नागवृद्धि वीत्रमातानचात्मिका ॥ द्वादशमसत्रा जस्मानिबो लसु सदा यिनी
 ॥ अदिमन्तो रुवासवा शीक लु स्वातमाहिनी ॥ यत्राद्यात्राकत्रालादीस्व
 मातमैत्रनायकी ॥ आकाशलि गसरुगा र्वचाम्गत्र सात्मिका ॥ स्वास्व

लीमंथनमंथना वायुमिकासर्वरुद्धिनी॥ अग्निजिह्वायाधी ॥ रा
सू लिनीसुसुतासदा। सुवर्णि काकालदूतीदवकार्यसुवृषिणी॥ कंठिनी
शीशिनीगुर्वीवात्राहीदूस्फुग्नात्मिका॥ उग्रान्ति कायद्वर्णीधूजंघीयक
धामिणी॥ दवीन त्यजुषा मन्त्रिणीवृषधामिणी॥ दंठिनीस्फुर्लि
नीस्फुर्लि॥ शमयणीप्रोक्तलीपुवा। क्रीकात्रिणीवामदवीखड्गिनीच
नन्दिनी॥ श्रीकात्रीवत्सलाद्रुक्षारुकात्रीमलहंसिनी॥ वडिणीउडिणी

उज्ज्वलीशमरवीशमनीध्रुवा। यत्रगजामयीसंवि० पूर्ण्यु० निवाशिनी॥
मनामनीरीषणीवपुनस्तारीममोरु। शिषी॥ संचद्विरेचिनीउडिण्यागि
नीनादिनीनवी॥ कदात्रिणीकालत्राविमद्यमालात्रमात्मिका॥ विरुवस्तार
य३ वदुयामरुग्रीधूमलाचना॥ मार्तण्डीयीठिनिलयादशनित्राधिनीवृषो
। वद्विसेवधिनीवध्रुवधिविमादुली॥ सावित्रीसङ्गटीकीर्ति
मात्रुयामरुदया॥ गुलेश्वरीगुलकात्रासुगलशुलपूयनी॥ गीमा

तागिति जासा धीसर्वो ली सर्वमंगलाः। नृका किनी सिद्धिर्कन्या का सासु
प्रसन्नपिणी॥ नृका कन्या पिणी यका योगिनीयी ० नृपिणी। दका दा
कायली दी का मदन मदन उना॥ दका हि विद्या धन ली धात्रिणी वसु
धा मिनी। विसृया निर्वसु सगा वसु धा ना वसु यिया॥ नर्मदा ही मर्दा गुह्य
सर्पिणी गुह्या तिका। गयनी नायिनी दी का सा धिनी समवायिनी। स्वमि
स्वस्ति मनिर्वा ला के यला विस्तु लिं गिनी। नृचिष्मणी तिथि मर्ती क ति

नीरुयवा हिनी॥ नृनायगा विष्णु विद्यामानसी रुयवा हिनी। विद्या ध
त्री लोक धात्री शिवसा नास्त्रपिणी॥ यशुद्धी सर्वगारुडा विष्ठा ही कि गु
या तिका। त्रिका ल निलया गुप्ती गुयी मागा गुयी गन ४॥ गुयी विद्या गु
द सात्रा गुयी नृया विष्णु कृत्वा। त्रिका दनत्वा त्रिविधा त्रिस्वना त्रिपुना
म्बिका॥ त्रिवर्ग त्रियंदात्री ॥ त्रिमूर्ति त्रिगुलध्वनी। त्रिदि वा त्रिद
॥ नृगिष्ठा यत्र वा सिनी॥ त्रिधन्नी त्रिद ॥ श्रुता त्रिद्यी त्रिपुन

मा लिनी। विष्णु क विद्या विरुग्मणे मा ना शुं व मा लिनी॥ ॐ नि शु वि
 पू न सु न्द यो म नु ना म स रु सु कं। क थि र्ग न व द वे शि न रु स्यं स च्च का
 म दं॥ स च्च पा य य ग म नै स च्च नी र्थ रु ल ष दं॥ स च्च स य न क र्त्त व द वी स च्च दा
 वि द ना श नं॥ स च्च त्रा ग रु र्त्त यं श्रं स च्च पा य वि ना श नं। नृ न स रु य न द वी
 पू ज यि त्वा स म ध्म म॥ सि ध्वा नि स क ला त स्य स य दा का म नू यि ली॥ अ स्य
 श्रं व र्द्धि र्ग न स्य वि द्या लक्ष्मी स य फ ला। य रु गे य ४ सु नि वि द्वा न् मि मं

का १ या ०

ना त्मि कं डि य ७॥

॥ ॐ नि शु वि र्दु जा म ल उ मा म रु श्व न र्त्त वा द श्र
 वि पू न सु न्द यी म रु ग म नु ना म स रु सु कं स मा र्क ॥ ८॥ अ क य १२३ ॥ स रु
 ॥ १ स व र्त्त न ८३ वे श्म ष मा श रु पू य रु

ॐ नमो रुद्राय सदाय ॥ नमो श्रीगणेशाय ॥ नमो रुद्राय ॥ वि
द्युश्चैत्राय वनदाय सत्रयियाय तन्मादनाय सकलाय जगद्धिनाय ॥ नमो न
नाय शुभित्यक्त विरुषिनाय ज्योतिराय गद्यनाथ नमानमस्तु ॥ रुक्माकि
नाशनयत्राय गणेशाय सर्वेश्वराय समदाय सत्रेश्वराय ॥ विद्याधराय वि
कटाय गजाननाय दवयुसन्नवदनाय नमानमस्तु ॥ त्वं विद्युल्लङ्घदलन
गिरि सन्दन तिरुकिप्रियति सूरवदतिरुल्लयदति ॥ विद्याय दत्तमस्तु

त्रिपथ सुवनिगत्या गणेशाय वनदारुवसि त्वमव ॥ रवं जद्विकतिव
वस्येदि रुषिगतिरुकिप्रियति गणि ॥ शरवन्नन्दनति ॥ सर्वेश्वराय
विमलत्रिपथ सुवनिगान दव नित्यमनद्यानय प्रियारिरुक्मान ॥ ॥
॥ मूचूक न्यडवावा ॥ श्रीनाथमस्तु गयक मस्तु नतिमिरोट मस्तु ॥ मारुयेक निमग्न श्रीमस्तु वस्तु ॥ श्रीवि ॥ ॥
त्वं वरुणकतिव दतिव सूर्यगतिवागीश्वरीति सकलतिवयावेतीति सूर्यश्वरीति सूर्यगतिवयवदति
गौद विनित्यमनद्याय प्रियाप्रिय त्वम ॥ २ ॥ श्रीमतिविश्वजननीति जगद्धिनाति विद्युतिधर्मनिवर्गति
नात्ययति ॥ श्रीमतिवदजननीति वयवदति गौद विनित्यमनद्याय प्रियालय त्वं ॥ ३ ॥ त्वं विदग्धमस्तु

धेविनादिनीनेवध।नेवधगमकगिसूत्रयिथति।नकखननरुलदगिचयवदनिर्गादविनित्यमनद्या
 यनियालयत्वम॥४॥आनन्दरुगनिलयत्यनलाहुंवेगिगूठगिरुवगमकगिशुरुवहति।विष्णुध्वनीगिक
 मलगिचयवदेनिर्गादविनित्यमनद्यायनियालयत्वम॥५॥नित्यगिदिवायन।नित्यमहवर्गेगिद्वयगिरु
 काउनदृश्यविनाशिनीति।शुद्धगिरामऊननीतिचयवेदनिर्गादविनित्यमनद्यायनियालयत्वम॥६॥
 यथदगिउमदगिमृषियिथगिग।उगिगत्वविहिनगियनात्यप्रति।शुद्धगियायननूकन्दक।निकेतिर्गा
 दविनित्यमनद्यायनियालयत्वम॥७॥त्वत्रिजनीगियनमामृग।ऊनीतिशुद्धीनमूखनववद्वयसयिथ
 गिलक्षीययदगिसूत्रयतिचयेवदनिर्गादविनित्यमनद्यायनियालयत्वम॥८॥उंतिगीसूदयना।
 मयूकन्दननैकाकाशयथना॥समायु॥गुरु॥छोयासुसम्बन्॥६६॥मासिनेशुकुयकपयादध्याति
 त्योमामवासन॥सूरनैकायिनि॥॥

हं नमगिवाय॥अस्यष्टीअपमृत्युहरतांगुलमंत्रस्यकालागिरुद्वक्रषिषायमोदेवता॥
 अनुष्टुपूकंद॥अहमेवकालद्विबीजं॥अहंकालस्येतिशक्तिः॥अपमृत्युस्थानेजपे
 विनियोगः॥ॐअहंकालीमहंकालीतत्वकालीअहमेवकालोनाहंकालस्यमे॥रुतंस
 त्यंपरंवह्मपुरुषंदक्षपिंगलं॥दुर्द्धरेतंविरूपाक्षंविश्वरूपायतेनमः॥नमस्तेफेनकप
 लाय॥वृषभोयपशूनांपतयेनमः॥ॐम।वरवृषभकपालिनेस्वाहा॥ॐसरुस्रज्ज
 लितमृत्युनाशनेस्वाहा॥ॐहंसीदीक्षांक्षी॥यःइमंमंत्रंनिसंध्यंजयति॥वह्मरुतं॥

वृषो रुति॥सुरापे असुरापि जवति॥सुवर्णस्तेयि अस्तेयि जवति॥गुरु दारा निगामि क्रूरा
 मिजवति॥सकृत् मंत्रं जपेत्त गायत्र्या अष्टोत्तरसहस्रफलं लभेत्॥रुद्रलोकं प्राप्तिर्नैव
 ति॥अष्टौ ब्राह्मणान् दद्यात्तयः कस्मिन् न दद्यात्तिसंश्लेषे तद्दृष्टिर्नैव ति दीयमानस्तु नया
 ह्यतिसदां ध्यो भवति॥मृत्युरागमने वरमासेन मंत्रो नाशयति॥अनेन मंत्रेण ब्रह्मा विष्णु
 रुद्रा यस्तनो जवति॥अष्टौ महासिद्धि मंत्रविधिः समाप्तः॥
 ॐ नमः शिवाय॥अस्य श्रीसदाशिवस्तोत्रमंत्रस्य मार्कण्डेयनाथिः अनुष्टुप् पूर्वदः श्रीस

दाशिवो देवता॥गौरीशक्तिः मम समस्तमृत्यं जयशान्त्यर्थं जपे विनियोगः॥ॐ रुद्रं यश्रुप
 तिं स्थापुं नीलकंठमुमापतिं॥नमामिशिरसा देव किन्नामृत्यः करिष्यति॥१॥कालकंठं क
 लमूर्तिं कालाग्निं कालनाशनं॥नमामिशि॥२॥नीलकंठं विरूपाक्षं निर्मलं निलयपुमं॥नमा
 मि॥३॥वामदेवं महादेवं लोकनाथं जगद्गुरुं॥नमामि॥४॥देवदेवं जगन्नाथं देवेशं वृ
 षभध्वजं॥नमामि॥५॥गंगाधरं महादेवं शंकरं शूलपाणिनं॥नमामि॥६॥भस्मेरु
 लितं सर्वगं नागा नृणां धारितं॥नमामि॥७॥आनंदं परमानंदं कैवल्यपदं गामिनं॥न

मामि॥६॥ स्वर्गायवर्गदातारं सृष्टिस्थित्यंतकारितं॥ नमामि॥७॥ पुनयस्तितिसंहार
 मादिकर्त्तरि मीश्वरं॥ नमामि॥८॥ मार्कंडेयमिदं स्तोत्रं यः पठेत् शिवसंनिधौ॥ तस्य
 मृत्युर्नयं नास्ति अग्निवैरजयंतया॥९॥ इति श्रीमार्कंडेयप्रोक्तं अथ मृत्युहन्त
 रं संपूर्णं॥ श्रीशंकराय नमः॥ १॥

श्रीगणेशाय नमः॥ युष्मिन्मित्रात्मधिवुक्ताववृद्धि॥

आशा सरकाथ

543

ASHA ARCHIVES